The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

55. भारतीय दर्शन में ज्ञान की अवधारणा

डॉ. रमेश कुमार निषाद
राजनीति विज्ञान विभाग
संघटक राजकीय महाविद्यालय, भदपुरा, नवाबगंज, बरेली (उत्तर प्रदेश)
पिन कोड – 262406

सारांश

भारतीय दर्शन में 'ज्ञान' की अवधारणा अत्यंत गहन, व्यापक और अनुभवसिद्ध है। यह केवल बौद्धिक जानकारी नहीं, बल्कि आत्मानुभूति, चेतना और सत्य की अनुभूति की प्रक्रिया है। भारतीय दार्शनिक परंपरा में ज्ञान को मोक्ष का साधन माना गया है, क्योंकि यह मनुष्य को अज्ञान से मुक्ति प्रदान करता है। उपनिषदों, वेदांत, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और बौद्ध दर्शन—सभी ने ज्ञान की प्रकृति, साधन और फल की विवेचना अपने-अपने दृष्टिकोण से की है।

भारतीय दृष्टि में ज्ञान का उद्देश्य केवल तथ्य जानना नहीं, बल्कि सत्य का साक्षात्कार करना है। यहाँ ज्ञान को तात्त्विक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से देखा गया है, जो प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आदि) के माध्यम से प्राप्त होता है। अद्वैत वेदांत के अनुसार आत्मा और ब्रह्म का अभेद ज्ञान का चरम रूप है, जबकि सांख्य दर्शन में पुरुष और प्रकृति के विवेक को ही ज्ञान कहा गया है।

ज्ञान की यह अवधारणा आधुनिक पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा से भिन्न है, क्योंकि यह विषय- वस्तु के बौद्धिक संबंध से आगे जाकर आत्मा की अनुभूति तक पहुँचती है। भारतीय दर्शन में ज्ञान का संबंध नैतिकता, मोक्ष और आत्मविकास से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार, ज्ञान यहाँ मात्र सूचना या तर्क का परिणाम नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक परिवर्तन की प्रक्रिया है जो व्यक्ति को सत्य, सद्गुण और आत्मानुभूति की दिशा में अग्रसर करती है।

मुख्य शब्द
ज्ञान, दर्शन, आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष, प्रमाण, अनुभव, सत्य, चेतना, भारतीय दर्शन।

परिचय

ज्ञान की उत्पत्ति जिज्ञासा से उत्पन्न होती हैं क्योकि जिज्ञासा से हमें किसी भी व्यक्ति, स्थान, घटना, समय के विषय में जानने की इच्छा जन्मती है और इसे सामान्य स्थिति में समझना असंभव सा जान पड़ता है अतः हम ज्ञान की खोज में

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

लिप्त होते हैं। ज्ञान का अर्थ (Meaning of knowledge) 'ज्ञान' शब्द 'ज्ञ' धातु से बना है जिसका अर्थ 'जानना' ,बोध,अनुभव एवं 'प्रकाश' से माना गया है। आसान शब्दो में कहा जाये तो किसी वस्तु के स्वरूप का,जैसा वह है,वैसा ही अनुभव या बोध होना ज्ञान है। ज्ञान शब्द मूल शब्द जिल्ड से निकला है, जो व्युत्पत्तिगत रूप से अंग्रेजी शब्द नोलेज से संबंधित है। भारतीय दर्शन में ज्ञान शब्द का अर्थ सत्य ज्ञान और मिथ्या ज्ञान दोनों है। इसी कारण भारतीय दर्शन में 'प्रमाद' शब्द का अर्थ है सच्चा ज्ञान और जो ज्ञान सत्य नहीं है उसे अप्रमा कहते हैं। ज्ञान वास्तविकता की दुनिया को प्रकट करता है। हम अपने सभी व्यावहारिक क्रियाकलापों को ज्ञान के माध्यम से पूरा करते हैं। सच्चा ज्ञान हमें सफलता की ओर ले जाता है। हमारी गतिविधियाँ वस्तुओं के प्रति अंधी प्रतिक्रियाएँ नहीं हैं। एक सफल क्रियाकलाप वस्तुओं के बारे में सही ज्ञान की अपेक्षा करता है। हम इस विश्वास के साथ किसी वस्तु के संदर्भ में एक विशेष तरीके से कार्य करते हैं कि हमारा ज्ञान उसकी प्रकृति को सही ढंग से प्रकट करता है। लेकिन कभी-कभी हमें कोई चीज़ वहाँ और जिस तरह से हम उम्मीद करते हैं, नहीं मिलती है और इस प्रकार हम यह जानकर चौंक जाते हैं कि ज्ञान हमेशा वास्तविकता का सही प्रतिनिधित्व करता है और यह अक्सर हमें गुमराह करता है और दुखद परिणामों की ओर ले जाता है। इस तरह हम सत्य और असत्य के बीच अंतर करने लगते हैं। सच्चा ज्ञान वास्तविकता का सही प्रतिनिधित्व है। ज्ञान स्वयं की एक आत्म-पारगम्य संपत्ति है। आत्मा एक आध्यात्मिक पदार्थ है। यह बुद्धि का निवास है। भारतीय ज्ञानमीमांसा या ज्ञान का सिद्धांत सामान्य, रोज़मर्रा के अनुभव के मामलों पर एक समझदार प्रवचन के लिए एक तर्कसंगत आधार प्रदान करने का प्रयास करता है, एक तरफ़ तो दूसरी तरफ़। ज्ञान के विषय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह इस विषय की वास्तविक, अर्थात् अस्तित्वगत प्रकृति, अर्थात ज्ञान को जानने वाले प्राणी के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करने का प्रयास करता है।

प्राचीन काल के यूरोपीय दर्शन में ज्ञानमीमांसा या ज्ञान के सिद्धांत को उतना ऊंचा दर्जा नहीं मिला था, जितना आधुनिक काल में है, खासकर लॉक, ह्यूम और कांट के दर्शन में। लेकिन भारतीय दर्शन के इतिहास में स्थिति अलग है। दर्शन की विभिन्न प्रणालियों की शुरुआत से ही ज्ञान की समस्या पर चर्चा अनिवार्य रही है। दर्शनशास्त्र का हिस्सा। इसका कारण यह है कि चार्वाकों को छोड़कर भारतीय दर्शन के सभी स्कूलों ने अज्ञान (अविद्या) या मिथ्याज्ञान (मिथ्याज्ञान) को मानवीय दुखों का मूल कारण माना है। इसलिए उन सभी ने अपने स्तर पर यह पता लगाने की कोशिश की है कि मनुष्य के दुखों का मूल कारण क्या है। सच्चे ज्ञान (प्रमाद) के साधन और प्रक्रियाएँ जिनके द्वारा वास्तविकता (तत्त्व) को जाना जा सकता है और मानवीय दुःख दूर हो सकते हैं। यह भावना सभी भारतीय दार्शनिकों की रही है दर्शनशास्त्र का अंग। इसका कारण यह है कि भारतीय दर्शन के सभी संप्रदायों ने, चार्वाकों को छोड़कर, अज्ञान (अविद्या) या मिथ्याज्ञान को मानवीय दुखों का मूल कारण माना है। इसलिए उन सभी ने सच्चे ज्ञान (प्रमा) के साधनों और प्रक्रियाओं को खोजने की पूरी कोशिश की है, जिसके माध्यम से वास्तविकता (तत्व) को जाना जा सके और मानवीय दुखों को दूर किया जा सके। गौतम के न्यायसूत्र के पहले सूत्र की व्याख्या में वाचस्पति की वाणी में सभी भारतीय दार्शनिकों की यह भावना प्रतिध्वनित

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

हुई है। उन्होंने टिप्पणी की है कि प्रमाण (ज्ञान के स्रोत) का अध्ययन आवश्यक है। केवल इसके माध्यम से ही हम वास्तविकता (तत्व) को ठीक से सकते हैं और अपने कार्यों को सही दिशा दे सकते हैं ताकि वांछित लक्ष्य प्राप्त कर सकें और दुखों से बच सकें। इसलिए सभी भारतीय दार्शनिकों ने अपने दार्शनिक अन्वेषण में उचित या सच्चे ज्ञान (प्रमा) की चर्चा को बहुत महत्व दिया है।

भारतीय दर्शन में ज्ञान शब्द का अर्थ सत्य ज्ञान और मिथ्या ज्ञान दोनों है। इसी कारण भारतीय दर्शन में 'प्रमा' शब्द का अर्थ सत्य ज्ञान (यथार्थज्ञान) है। और जो ज्ञान सत्य नहीं है उसे अप्रमा कहते हैं। पाश्चात्य दर्शन में ज्ञान हमेशा सत्य ज्ञान के लिए ही होता है। मिथ्या ज्ञान ज्ञान नहीं है। ज्ञान हमेशा विश्वास और सत्य के साथ मिला हुआ होता है। इसलिए, यदि विश्वास या सत्य नहीं है तो ज्ञान मिथ्या हो जाता है। इसलिए, ज्ञान हमेशा सत्य ज्ञान के लिए ही होता है। ज्ञान का सत्य ज्ञान और मिथ्या ज्ञान में विभाजन अर्थहीन है और मिथ्या ज्ञान केवल अज्ञान का नाम है। इसलिए, मिथ्या शब्द सकारात्मक रूप से विरोधाभासी है। ज्ञान वास्तविकता की दुनिया को प्रकट करता है। हम ज्ञान के माध्यम से अपनी सभी व्यावहारिक गतिविधियों को पूरा कर सकते हैं। सच्चे ज्ञान से हम सफलतापूर्वक कार्य कर सकते हैं। सच्चा ज्ञान वास्तविकता का सही प्रतिनिधित्व है। आत्मा एक आध्यात्मिक पदार्थ है और बुद्धि (चैतन्याश्रय) आत्मा का एक आवश्यक गुण है। इच्छा, दर्द, सुख और अनुभूति आत्मा के विशिष्ट गुण हैं। भारतीय दर्शन की विभिन्न परंपराओं के विभिन्न ऑन्टोलॉजीज के लिए ज्ञान की विभिन्न धारणाओं की आवश्यकता होती है। ब्राह्मणवादी स्कूलों के अनुसार, ज्ञान शाश्वत की एक क्षणिक संपत्ति है व्यक्तिगत आत्मा (आत्मा)। ज्ञान और आत्मा के बीच का संबंध, गुणवत्ता और पदार्थ। यह वही संबंध है जो रंग और सामग्री के बीच होता है पदार्थ को बर्तन की तरह माना जाता है जिसमें वह समाया रहता है। इसके विपरीत, बौद्ध धर्म के लोग पदार्थ के अंदर होने के विचार को अस्वीकार करते हैं। सामान्य और विशेष रूप से एक स्थायी आत्मा या स्वयं की जागरूकता। उनके अनुसार जागरूकता (ज्ञान) अस्तित्व (धर्म) का एक आदिम (गैर व्युत्पन्न) तत्व जो केवल अपने कारणों पर निर्भर करता है और परिस्थितियों (जैसे, भावना, वस्तु और पिछले मानसिक कारक) पर निर्भर नहीं है, न कि किसी स्थायी आत्मा जैसे किसी सब्सट्रेट पर। सांख्य और योग ब्राह्मणवादी परंपरा में इस बात का दावा करने में अद्वितीय हैं कि संज्ञानात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाएं पदार्थ के दायरे में होती हैं और उनका चेतन आत्मा से कोई सीधा संपर्क नहीं होता है, जो उनसे अलग और पूरी तरह से निष्क्रिय है। जागरूकता या चेतना, पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु जैसे भौतिक तत्वों के संयोजन से उत्पन्न होती है जब वे शरीर, भावना और वस्तु में विकसित होते हैं, ठीक उसी तरह जैसे कि नशे की शक्ति तब उत्पन्न होती है जब कुछ पदार्थ किण्वित होते हैं। वैध ज्ञान, ज्ञान (बुद्धि) का एक विशेष रूप है। सभी ज्ञान वैध ज्ञान नहीं होते। इसलिए वैध ज्ञान की प्रकृति को समझने के लिए हमें सबसे पहले ज्ञान या ज्ञान की प्रकृति को जानना होगा। ज्ञान अपने अलावा अन्य चीजों को प्रकाशित करता है। बोध का विषय कोई वस्तु या गुण, कोई कार्य या भावना, विद्यमान और अविद्यमान दोनों हो सकता है। लेकिन हर मामले में

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

जिसमें ज्ञान है, वहाँ कुछ ऐसा अवश्य होना चाहिए जो ज्ञान के विषय के रूप में सामने आए। सभी चीजें हमारे सामने तब प्रकट होती हैं जब वे ज्ञान की वस्तु बन जाती हैं।

ज्ञान आत्मा का एक आत्म-पारगम्य गुण है। आत्मा एक आध्यात्मिक पदार्थ है। यह बुद्धि का निवास है। बुद्धि आत्मा का एक आवश्यक गुण है, जो इसे भौतिक पदार्थों से अलग करता है। आत्मा एक उद्देश्यपूर्ण इकाई है क्योंकि यह किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर कार्य करती है। जब आत्मा अपने अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर लेती है तो वह अपने विशिष्ट गुणों से मुक्त हो जाती है लेकिन वह कभी भी अपनी बुद्धि से रहित नहीं होती। न्याय का मानना है कि "ज्ञान विषय और वस्तु दोनों को प्रकट करता है जो स्वयं से बिल्कुल अलग हैं। सभी ज्ञान वस्तुओं का रहस्योद्घाटन या प्रकटीकरण है। जिस प्रकार एक दीपक अपने सामने रखी भौतिक वस्तुओं को प्रकट करता है, उसी प्रकार ज्ञान अपने सामने आने वाली सभी वस्तुओं को प्रकट करता है।" न्याय-वैषिक दर्शन के अनुसार ज्ञान का अर्थ है वस्तुओं के बारे में जागरूकता या बोध। हमारी अनुभूति या बोध का विषय कोई वस्तु या गुण, कोई कार्य या भावना हो सकती है। यह अस्तित्व में भी हो सकती है और अस्तित्वहीन भी। सभी वस्तुएं ज्ञान द्वारा स्वयं के लिए प्रकट या अभिव्यक्त होती हैं। ज्ञान के प्रकाश से हम अपनी सभी व्यावहारिक गतिविधियाँ कर सकते हैं।

न्याय-वैशेषिक के अनुसार आत्मा चेतन घटनाओं की एक श्रृंखला नहीं है। लेकिन यह इंद्रिय छापों को निर्धारित कर सकती है और उन पर प्रतिक्रिया करने की शक्ति रखती है। आत्मा एक चेतन इकाई है जो इंद्रिय छापों को प्राप्त करती है और उनके माध्यम से बाहरी वस्तुओं को जानती है। ज्ञान ज्ञानेंद्रिय संवेदनाओं को निर्धारित कर सकता है और उन पर प्रतिक्रिया करने की शक्ति रखता है। आत्मा एक सचेतन इकाई है जो इंद्रिय संवेदनाओं को प्राप्त करती है और उनके माध्यम से बाहरी वस्तुओं को जानती है। ज्ञान संज्ञानात्मक तरीका है जिसके द्वारा हम वस्तुओं को समझ सकते हैं जब हम किसी वस्तु को पहचानते हैं तो हम सुख और दुख का एहसास भी कर सकते हैं। लेकिन ज्ञान भावना या इच्छा की भावना नहीं है, हालांकि वे इसके साथ जुड़े हुए हैं। ज्ञान की अपनी कुछ विशिष्ट विशेषताएं हैं। ज्ञान अलग और आत्मनिर्भर है। ज्ञान स्वयं की अर्जित विशेषताएं हैं। मानस और इंद्रियों के माध्यम से आत्मा इसे प्राप्त करती है। अनुभूति एक मनो-शारीरिक जीव है और मन-शरीर संबंध पर निर्भर करती है। शरीर से आत्मा के अलग होने के बाद, आत्मा अनुभूति, सुख, दर्द, इच्छा आदि से रहित शुद्ध पदार्थ की अपनी स्वाभाविक इकाई प्राप्त करती है। इसलिए, न्याय और प्रभाकर के अनुसार आत्मा एक शुद्ध पदार्थ है और अनुभूति स्वयं की अर्जित विशेषताएं हैं और यह स्वयं की प्रकृति को प्रभावित नहीं कर सकती है।

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

न्याय-वैशेषिक सिद्धांत के अनुसार अनुभूति स्वयं प्रकाशमान नहीं होती। यह अनुभूति की एक बाद की अवस्था में जानी जाती है जिसे 'अनुव्यवसाया' कहते हैं। यह एक आंतरिक अनुभूति है। जब मैं किसी मेज को देखता हूँ तो मेरी पहली जागरूकता यह होती है कि "यह एक मेज है"। इस पहली जागरूकता को 'व्यवसाया' कहते हैं। और अगले ही क्षण मुझे पता चलता है कि मुझे मेज का बोध है। इस बाद की अनुभूति को मूल अनुभूति (मेज की) का 'अनुव्यवसाया' कहते हैं जिसे 'व्यवसाया' कहते हैं। न्याय प्रणाली यह दर्शाती है कि अनुभूति स्वयं का आकस्मिक गुण है। जब यह मानस और इन्द्रियों के संपर्क में आता है। लेकिन जब शरीर इससे अलग हो जाता है आत्मा और आत्मा मुक्ति की अवस्था में होती है, ज्ञान, सुख, दुख और इच्छाएँ उसके मूल स्वभाव को प्रभावित किए बिना चली जाती हैं। तब आत्मा एक शुद्ध पदार्थ के अपने प्राकृतिक रूप को प्राप्त कर लेती है। वात्स्यायन परिभाषित करते हैं, "वैध अनुभूति वह ज्ञान है जो अपने विषय के वास्तविक चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है या जो उसमें मौजूद है उसे ग्रहण करता है"। दूसरी ओर, भट्ट स्कूल के जनक कुमारिल के अनुसार, चेतना स्वयं का सार है, जो आत्मत्व से अविभाज्य है। चेतना आत्मत्व का मूल है। विशिष्ट ज्ञान कभी-कभी स्वयं की प्राकृतिक शुद्धता में कोई अंतर किए बिना उत्पन्न होता है। इंद्रियों की निष्क्रियता का अर्थ है ज्ञान की अनुपस्थिति, संज्ञानात्मक के माध्यम सेशक्ति बरकरार रहेगी.

प्रख्यात भट्ट मीमांसा दार्शनिक पार्थसारथी मिश्र के अनुसार,मुक्त होने से न केवल वस्तु चेतना नष्ट होती है बल्कि आत्म-चेतना भी नष्ट हो जाती है क्योंकि सभी कर्मों के समाप्त हो जाने के कारण मन और अन्य इन्द्रियाँ नष्ट हो जाती हैं शब्द के साथ संबंध स्थापित किया जाता है। इस आपत्ति का उत्तर देते हुए कि 'ज्ञान शक्ति के मुक्त होने की स्थिति में क्यों उत्पन्न नहीं होता?

कुमारिल ने कहा कि आत्मा स्वाभाविक रूप से अनुभूति की शक्ति से सुसज्जित है, लेकिन मुक्ति की स्थिति के दौरान, क्योंकि आत्मा द्वारा जीवन का शिखर प्राप्त कर लिया गया है, उसे वस्तुओं को जानने की आवश्यकता महसूस नहीं होती है क्योंकि अब वस्तुनिष्ठ दुनिया के साथ कोई व्यवहार नहीं रह जाता है।

सालिकनाथ कहते हैं, "ज्ञान आत्मा के नौ क्षणिक गुणों में से एक है। ज्ञान को स्वयं बनाए रखना है और बाकी को मानसिक धारणा के माध्यम से बोधगम्य होना है"। सुचरिता मिश्र, एक प्रख्यात भट्ट मीमांसा दार्शनिक के अनुसार, चेतना आत्मा की अंतर्निहित संपत्ति है और मुक्ति की अवस्था में भी आत्मा चेतना से रहित नहीं होती। ज्ञानात्मक शक्ति या चेतना आत्मा से अविभाज्य है। और जब वस्तुओं के बारे में कोई जागरूकता नहीं होती है, तो उसका विषय आत्मा ही होता है क्योंकि ज्ञान कभी भी ज्ञान की वस्तु के बिना नहीं हो सकता। ज्ञान का साधन मानस शाश्वत है और मुक्ति की अवस्था में भी आत्मा उससे जुड़ी रहती है। वस्तु-ज्ञान के लिए मानस हमेशा बाहरी दुनिया पर निर्भर रहता है। मुक्ति के दौरान वस्तु चेतना का त्याग हो जाता है, लेकिन आत्म चेतना का त्याग नहीं होता। यह शाश्वत और अविनाशी है। प्रभाकर के अधिवक्ताओं के अनुसार आत्मचेतना प्रत्येक अनुभूति में शामिल होती है और मुक्ति की स्थिति में आत्मा

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

अचेतन हो जाती है क्योंकि यह इंद्रियों की अनुपस्थिति के कारण वस्तु रूपों से प्रभावित नहीं होती है। इंद्रियाँ या शरीर या अनुभूति जानने वाला विषय नहीं हैं। यह आत्मा ही है जो ज्ञाता है और यह किसी भी स्थिति में और किसी भी समय ज्ञातात्व से रहित नहीं हो सकती। पार्थसारथी कहते हैं, "ज्ञान वह है जो अनिवार्य रूप से वस्तु को प्रकट करता है; इसलिए आत्मा अनुभूति नहीं है। इस प्रकार आत्मा ज्ञान नहीं बल्कि ज्ञाता है और वास्तविकता ज्ञान नहीं बल्कि ज्ञान की वस्तु। ज्ञान वास्तविकता का गठन नहीं करता है; यह वास्तविकता का रहस्योद्घाटन है।" अद्वैतवेदांत दर्शन के मुख्य प्रतिपादक शंकर उच्चतर ज्ञान और निम्नतर ज्ञान के बीच अंतर करते हैं। उच्चतर ज्ञान सच्चा ज्ञान (विद्या) है और निम्नतर ज्ञान मिथ्या ज्ञान (अविद्या) है। पूर्व का अर्थ है कि ज्ञाता और ज्ञेय अंततः एक ही वास्तविकता हैं। यह वास्तविकता का पूर्ण ज्ञान है। उच्चतर ज्ञान स्थान, समय और कारणता से वातानुकूलित नहीं है। यह विषय वस्तु रहित चेतना है। निम्नतर ज्ञान स्थानिक-लौकिक दुनिया पर निर्भर करता है। सच्चा ज्ञान तत्काल, समग्र अनुभव है जो अविद्या को समाप्त करता है और परम सत्य की प्रकृति को प्रकट करता है। सच्चा ज्ञान अंतर्ज्ञान है जो द्वैत के बौद्धिक ज्ञान को निरस्त कर देता है। यद्यपि विद्या और अविद्या एक दूसरे के विरोधी हैं, फिर भी बुद्धि परम ज्ञान की ओर एक कदम है। बुद्धि अंतर्ज्ञान का साधन है। विशिष्टाद्वैतवेदान्त के प्रवर्तक रामानुज के अनुसार, आत्मा स्वयं प्रकाशमान और स्वयं चेतन दोनों है। यह केवल अपने आप को प्रकट कर सकती है, वस्तु को नहीं। ज्ञान स्वयं को तथा अपनी वस्तुओं को प्रकट कर सकता है। लेकिन यह न तो स्वयं को जान सकता है और न ही अपनी वस्तु को। लेकिन आत्मा स्वयं को तथा अपनी वस्तु दोनों को जान सकती है। ज्ञान आत्मा का सार नहीं, बल्कि आत्मा का गुण है। आत्मा ज्ञान नहीं है, बल्कि ज्ञान द्वारा योग्य है। सभी ज्ञान में विवेक शामिल है और हम किसी भी अविभेदित वस्तु को नहीं जान सकते। रामानुज ने कहा कि हमारा सारा ज्ञान अपूर्ण और आंशिक है। जब हम सीप के टुकड़े को चांदी समझ लेते हैं, तो हम कुछ विशेषताओं को देखते हैं और कुछ को नहीं देख पाते। सच्चा और गलत ज्ञान दोनों ही स्वभाव से अपूर्ण हैं। पहला हमारे व्यावहारिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है, जबकि दूसरा हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। मृगतृष्णा एक भूल है, क्योंकि इसमें मौजूद पानी हमारी प्यास नहीं बुझाता। सच्चा ज्ञान हमेशा वस्तु को उसी रूप में प्रस्तुत करता है, जैसी वह है (यथार्थ) और व्यावहारिक रूप से यह जीवन में उपयोगी है (व्यवहारानुगा)। भारतीय दर्शन में बौद्ध इस दृष्टिकोण को मानते हैं कि ज्ञान, एक अस्तित्वमान तथ्य के रूप में, दर्शाने की क्रिया में निहित है और किसी वस्तु की ओर ले जाता है। जैन धर्म का मानना है कि ज्ञान किसी वस्तु को तभी समझ सकता है, जब वह स्वयं को समझ ले। ज्ञान, एक दीपक की तरह, स्वयं को और बाहरी वस्तुओं को प्रकाशित करता है। सांख्य का मानना है कि ज्ञान न तो आत्मा का स्वरूप है और न ही गुण। यह इसका सार है, आत्मा अनिवार्य रूप से सचेतन है। ज्ञान कोई भौतिक उत्पाद नहीं है। यह एक अभौतिक पदार्थ की गतिविधि है जो आत्मा है। ज्ञान निराकार (निराकार) है, गुणहीन है और कभी भी दूसरों का भौतिक कारण नहीं हो सकता। यह कोई पदार्थ नहीं है, बल्कि यह बुद्धि का रूपांतरण है जो इसका आधार है। इस प्रकार, ज्ञान सभी व्यावहारिक गतिविधियों का आधार है।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

ज्ञान का कार्य स्वयं के अलावा अन्य चीजों को प्रकाशित करना है। ज्ञान के कार्य में एक वस्तु होती है जो प्रकट होती है, एक आत्मा जिसके लिए यह प्रकट होती है और अंत में रहस्योद्घाटन का तथ्य स्वयं होता है। ये तीन कारक स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकते हैं। लेकिन ज्ञान के कार्य में, ज्ञान हमेशा आत्मा को उस वस्तु से जोड़ता है जिसे इसके द्वारा जाना जाता है।

अनुभूति:

1) यह एक गुण है;

ii) यह समस्त भाषायी प्रयोग (व्यवहार) का आधार है;

iii) इसमें 'चेतना' (ज्ञानत्व) गुण है।

इन तीन विशेषताओं में से 'चेतना' (ज्ञानत्व) अनुभूति का परिभाषित चिह्न है। ज्ञान एक संज्ञानात्मक तथ्य है जिसके द्वारा हम वस्तुओं को समझ सकते हैं। ज्ञान वस्तुओं की अभिव्यक्ति (प्रकाश) में निहित है। ज्ञान के प्रकाश से हम सभी तर्कसंगत अभ्यास और बुद्धिमान गतिविधि कर सकते हैं। यह वास्तविकता का सबसे मौलिक तथ्य है। यह सभी वास्तविकता का आंतरिक चरित्र है। अद्वैत वेदांत के अनुसार अज्ञात को ज्ञात से जोड़ने से ज्ञान बढ़ता है। हमारा मन कोई कोरा कागज़ नहीं है। मन में पहले से ही कुछ ज्ञान होता है। यह अधूरा ज्ञान है और इसका उपयोग करके हम इसे और अधिक पूर्ण और उपयोगी ज्ञान बनाते हैं। अद्वैत का मानना है कि ज्ञान आत्मा की प्राप्ति नहीं है बल्कि उसका सार है। यह आकस्मिक नहीं है बल्कि आत्मा का घटक है। सभी ज्ञान की पूर्व शर्त चेतना है। यदि वे चेतना से प्रकाशित नहीं हैं तो कोई ज्ञान उत्पन्न नहीं होगा। उपरोक्त भारतीय दर्शन में ज्ञान की प्रकृति और स्थिति का संक्षिप्त विवरण है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर हम कह सकते हैं कि ज्ञान की अद्वैत परिभाषा एक सार्थक और संतोषजनक परिभाषा है। इसके अलावा, हालांकि इसका मुख्य उद्देश्य अनुभवजन्य दुनिया की वस्तुओं से निपटना है, लेकिन इसे पारलौकिक वास्तविकता पर भी लागू किया जा सकता है। मोटे तौर पर, अद्वैत वेदांत दर्शन ज्ञान को उसके अनुभवजन्य और उसके आध्यात्मिक या पारलौकिक पहलू में देखता है। अपने आध्यात्मिक या पारलौकिक पहलू में ज्ञान शुद्ध चेतना या ब्रह्म है। अद्वैत के अनुसार, एक बर्तन, अनुभवजन्य वास्तविकता की एक वस्तु का सच्चा ज्ञान उस वस्तु का ज्ञान है जो अब पहले से ज्ञात (अनाधिगत) है और जिसका खंडन नहीं किया गया है (अबाधिता)। उसी तरह, यह भी कहा जा सकता है कि ब्रह्म का ज्ञान पारलौकिक वास्तविकता का ज्ञान है जो पहले से ज्ञात नहीं है (अनाधिगत) देहांतरण अवस्था (संस्कारकाले) में और जिसका खंडन नहीं किया गया है (अबाधिता)।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV (Special), October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

सन्दर्भ सूची

1. शर्मा, चंद्रधर. (2000). *भारतीय दर्शन का आलोचनात्मक सर्वेक्षण*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड. पृ. 192.
2. Sinha, J. (1978). *Indian Philosophy* (Vol. 1). Delhi: Motilal Banarsidass Publishers Private Limited. p. 484.
3. भट्ट, गोवर्धन पी. (1989). *जानने के बुनियादी तरीके*. नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड. पृ. 19.
4. वही. पृ. 17.

The Asian Thinker